Educational Psychology

B.A. (Hons.) Part – III
Paper – VI Group – (B)
By – Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D.
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
V.K.S.U., Ara

HANDICAPPED-CHILDREN & PROGRAMME TO EDUCATE THEM

शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत Exceptional children का अध्ययन बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रत्येक विद्यालयों में कुछ ऐसे बच्चें होते हैं जो अपनी विशेषताओं एवं कार्यों तथा प्रभावों के कारण अपनी तरफ ध्यान खींच लेते हैं। सामान्यतौर पर ऐसे बच्चें अपनी विशिष्टताओं के कारण मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाशास्त्रियों एवं शिक्षकों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किये हुए रहते हैं। साधारण बालकों की तुलना में इनकी शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक तत्वों में अन्तर होता है। इसीलिये इन्हें विशिष्ट (या Special children) बालक भी कहा जाता है। ऐसे बालक आमतौर पर सामान्य बच्चों से कुछ अलग हटकर होते हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि ऐसे बच्चे शारीरिक एवं मानसिक विशेषगुणों में अन्य बच्चों से अधिक अच्छे भी हो सकते हैं या अधिक खराब भी हो सकते हैं। इसीलिये इन्हें Exceptional children या असाधारण बच्चे भी कहते हैं। क्रो एवं क्रो ने इन्हें परिभाषित करते हुए कहा है:-

"The term typical or exceptional is applied to a trail or to person possessing the trail in the extent of deviation from normal presence of the trail in him."

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे बच्चे सामान्य बच्चों से कुछ अलग हटकर होते हैं। ये बौद्धिक दृष्टि से अच्छे भी हो सकते हैं और खराब भी हो सकते हैं। इनमें समायोजन सम्बन्धित समस्याएँ भी पाई जाती हैं। उपर्युक्त

Educational Psychology (1)

B.A. (Hons.) Part - III
Paper - VI Group-(B)
By - Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D.
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
V.K.S.U. Ara

HANDICAPPED-CHILDREN & PROGRAMME TO EDUCATE THEM

शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत Exceptional children का अध्ययन बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रत्येक विद्यालयों में कुछ ऐसे बच्चें होतें हैं जो अपनी विशेषताओं एवं कार्यों तथा प्रभावों के कारण अपनी तरफ ध्यान खींच लेतें हैं। सामान्यतौर पर ऐसे बच्चें अपनी विशिष्टताओं के कारण मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाशास्त्रियों एवं शिक्षकों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किये हुए रहतें हैं। साधारण बालकों की तुलना में इनकी शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक तत्वों में में अन्तर होता है। इसीलिये इन्हें विशिष्ट (या Special children) बालक भी कहा जाता है। ऐसे बालक आमतौर पर सामान्य बच्चों से कुछ अलग हटकर होतें हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि ऐसे बच्चे शारीरिक एवं मानसिक शीलगुणों में अन्य बच्चों से अधिक अच्छे भी हो सकतें हैं या अधिक खराब भी हो सकतें हैं। इसीलिये इन्हें Exceptional children या असाधारण बच्चे भी कहतें हैं। क्रो एवं क्रो ने इन्हें परिभाषित करते हुए कहा है:-

"The term typical or exceptional is applied to a trail or to person possessing the trail in the extent of deviation from normal presence of the trail in him."

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे बच्चे सामान्य बच्चों से कुछ अलग हटकर होतें हैं। ये बौद्धिक दृष्टि से अच्छे भी हो सकतें हैं और खराब भी हो सकतें हैं। इनमें अभियोजन सम्बन्धित समस्याएँ भी पाई जातीं हैं। उपर्युक्त

के आलोक में हम इन्हें तीन श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं :-

विशिष्ट या असाधारण बालक

Ⓐ विकलांग या दिव्यांग बालक Ⓑ मंद बुद्धि बालक Ⓒ प्रतिभाशाली बच्चे

प्रश्नानुसार यहाँ हम विकलांग या नई शब्दावली में दिव्यांग बच्चों के विषय में अध्ययन करेंगे। इस श्रेणी के बच्चे आमतौर पर आंगिक रूप से विकृति के शिकार होते हैं तथा इनमें ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक दोष पाये जाते हैं। क्रो एवं क्रो के अनुसार :-

"ये ऐसे बच्चे होते हैं, जिनमें इस तरह का शारीरिक दोष होता है जो उसे किसी भी रूप में साधारण क्रियाओं में भाग लेने से रोकता है अथवा सीमाएँ (Limitations) बन जाता है, ऐसे बच्चों को ही हम विकलांग कहते हैं। इस श्रेणी के बच्चे आंशिक अथवा पूर्ण रूप से अँधे, बहरे, गूंगे या अपंग हो सकते हैं। विकलांगता के चलते उनके शिक्षण एवं अभियोजन में भी दिक्कतें आ सकती हैं। ध्यान रहे ऐसे बच्चे बौद्धिक क्षमता के लिहाज से सामान्य या असामान्य दोनों हो सकते हैं, ऐसी स्थिति में ऐसे बच्चों की शिक्षा व्यवस्था एवं समायोजन राष्ट्र एवं समाज के लिये बहुत बड़ी चुनौती बन जाती है।

शिक्षा व्यवस्था :-

प्रत्येक व्यक्ति को मानवोचित मर्यादा के साथ जीने का अधिकार है, ऐसी हालात में विकलांग बच्चों को शिक्षित एवं नियोजित करना प्रत्येक राष्ट्र एवं सभ्यसमाज का दायित्व हो जाता है। यदि विकलांग बच्चे शिक्षित हो जाते हैं तो अपनी जीविकोपार्जन करने में सक्षम हो जाते हैं जिससे उन्हें अभियोजन करने में सहूलियत होती है,

विकलांगता भी कई तरह की होती है जिसकी चर्चा यथास्थान ऊपर की जा चुकी है। अतः ऐसे बच्चों को शिक्षा देने से पूर्व इनकी विकलांगता के स्वरूप एवं योग्यता को अवश्य ही ध्यान में रखकर योजनाएँ बनानी चाहिए। इतना ही नहीं इनकी विकलांगता के स्वरूप के साथ-साथ विकलांगता प्रतिशत भी अलग-अलग होता है। इन सारी चीजों पर ध्यान देते हुए शिक्षा की व्यवस्था होनी

चाहिए। विकलांग बच्चे भी कई तरह के विकलांगता से ग्रस्त हो सकते हैं। विकलांगता के कुछ प्रमुख प्रकार निम्नवत है, जिनकी शिक्षा व्यवस्था :—

(1) अपंग बालकों की शिक्षा व्यवस्था :— इस श्रेणी में ऐसे बालक आते हैं जो किसी बीमारी या शारीरिक चोट के कारण आंशिक रूप से अपंग हो जाते हैं। विकलांग होने की वजह से ये हीनभावना से ग्रस्त होते हैं। अपंग बालकों की शिक्षा के लिए निम्न बातों पर ध्यान देनी चाहिए :—

(i) अपंग बच्चों को शिक्षा देते समय इनकी रुचि एवं योग्यता का ध्यान रखना चाहिए। सामान्यत: ऐसे बच्चों की बुद्धि सामान्य बच्चों की तरह ही होती है।

(ii) शिक्षा के माध्यम से इनको इस प्रकार प्रोत्साहित की जानी चाहिए की अपनी हीन भावना से बाहर निकल जाए और समुचित व्यवहार का विकास कर सकें।

(iii) इनके पढ़ने की जगह पर बेंच, कुर्सी इस तरह की होनी चाहिए कि आराम से बैठकर ज्ञानार्जन कर सकें।

(iv) इन्हें योग्यतानुसार व्यवसायिक शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि आत्मनिर्भर बन जाएँ।

(v) स्कूलों में इनके लिए अलग सीढ़ियाँ होनी चाहिए।

(vi) आजकल सरकार शिक्षा एवं व्यवसाय चयन में कई तरह की सुविधा मुहैय्या करा रही है।

(2) अंधे बालकों की शिक्षा व्यवस्था :— अंधे बालकों से तात्पर्य वैसे बालकों से है जिन्हें देखने की क्षमता का अभाव होता है। इनकी शिक्षा के लिये अब कई तरह के उपकरण एवं यंत्र आ गए हैं जिनके माध्यम से शिक्षा दी जा सकती है, जैसे :—

(i) ब्रेल पद्धति - इसके आविष्कारक लुई ब्रेल है। इनके पुस्तक में अक्षर संकेताक्षर होते हैं जिन्हें छूकर ये पहचान जाते हैं। उनमें अंक एवं अक्षर उठे हुए होते हैं जिन्हें अंगुलियों के स्पर्श से ये पहचान लेते हैं।

(ii) विद्युत पद्धति - इसमें विद्युत पेंसिल होती है जिसकी सहायता से ब्रेल लिपि पढ़ लेते हैं। इससे अक्षर छूने पर आवाज उत्पन्न होती है जो इयर फोन के माध्यम से अंधे लोग सुन पढ़ जाते हैं।

(iii) विशिष्ट पाठ्यक्रम : आमतौर अंधे लोग संगीत में ज्यादा रुचि

रखते हैं। अतः उन्हें संगीत सीखने का पर्याप्त मौका देना चाहिए।

(iv) विशिष्ट स्कूल। - इनके लिए अलग से Specialized School होनी चाहिए, जहाँ आराम से लिख पढ़ सकें।

आंशिक रूप से अंधे व्यक्ति को बड़े अक्षरों वाली पुस्तक उपलब्ध कराना चाहिए। उन्हें उचित दूरी पर बैठने के लिए प्रेरित करना चाहिए। आँखों के लिए उपयुक्त लेंस वाली चश्मा की प्रबन्ध चिकित्सक की सलाह से देनी चाहिए।

(3) बहरे बालकों की शिक्षा व्यवस्था। -

बहरे बालकों की शिक्षा की व्यवस्था में खास तरह की सावधानियाँ रखनी पड़ती है। ऐसे लोग सुन नहीं सकते हैं। गूंगे बालक विकृत ही जन्मजात बहरे होते हैं। इनके साथ दोनों तरह की समस्याएँ होती है। कुछ बच्चे जन्म से बहरे होते हैं। यहाँ एक बात और ध्यान देने वाली है. जन्मजात बहरे बालक गूंगे होते हैं। इनकी शिक्षा भी सामान्य बच्चों से अलग देनी चाहिए।

(i) उन्हें ऐसे काम का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिसमें बोलने की आवश्यकता नहीं होती है।

(ii) उन्हें योग्यतानुसार बढ़ई, कुम्हार या मिस्त्री का काम सिखाया जा सकता है। जैसे टेबुल कुर्सी बनाना, छुरी कैंची बनाना, बेंत की चीजें बनाना आदि। अगर लड़की है तो सिलाई - कढ़ाई, बुनाई का कार्य दक्षता के साथ करते हैं।

(iii) नहीं सुन पाने के कारण ये अपने कार्यों को एकाग्र होकर करते हैं और दक्ष होते हैं।

(iv) उन्हें वर्ग में ऐसे जगह बैठाया जाना चाहिए जहाँ से शिक्षक की भावभंगिमा आसानी से देख सकें।

(v) इयरफोन की व्यवस्था भी लाभप्रद है।

(vi) इनमे क्रियात्मक योग्यता अधिक होती है। अतः क्रियात्मक शिक्षा दी जानी चाहिए।

(4.) गूंगे एवं हकलानेवाले बालकों की शिक्षा। - कुछ बच्चों में जन्म से

इस तरह की समस्याएँ पाई जाती हैं। अतः ऐसे बच्चों को रुचि के अनुसार भाषा का ज्ञान एवं प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इन्हें लेखन कार्य में लगाया जा सकता है। वाद्ययंत्रों की संगीत शिक्षा भी दी जा सकती है

(i) इन्हें सामान्य बच्चों से अलग शिक्षा मिलनी चाहिए।

(ii) शिक्षकों को इनकी भावना का कद्र करते हुए शिक्षा देनी चाहिए इनके साथ अच्छा व्यवहार होना चाहिए।

(iii) हकलाने एवं तुतलाने वाले बच्चों के माता-पिता को चाहिए कि बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करें एवं उनकी रुचि एवं योग्यता तथा आवश्यकता के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करें।

(iv) अच्छे से बोलने के लिए बार-बार प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना चाहिए।

ध्यान रहे कुछ बच्चे जन्म से ही बहरे एवं गूंगे होते हैं। ऐसे बच्चों की शिक्षा इनके बहरेपन को ध्यान में रखकर करना उचित होता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि विकलांग बच्चों में भी अनेक क्षमताएँ मौजूद होती हैं, जिसे पहचान कर उचित शिक्षा की व्यवस्था कराने की आवश्यकता है। यदि इनको शिक्षा की समुचित प्रबन्ध होता है तो ये भी राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अन्यथा ऐसे बच्चे राष्ट्र एवं समाज पर भार बनकर रह जाएँगे। अतः इनकी शिक्षा देते वक्त इनके योग्यतानुसार व्यवसायिक शिक्षा देना ही श्रेयस्कर होता है।

रमेश
22.7.2020